Fourth Edition

विकृति ...?

स्वयं

समझो
देखभाल करो
बचाव करो

स्वास्थ्य कर्मचारी और कुष्ठ से
प्रभावित लोगों के लिए मार्गदर्शिका

First Edition 2007
Second Edition 2008
Reprint 2010
Reprint 2011
Reprint 2012
Third Edition 2013
Reprint 2014
Reprint 2016
Fourth Edition 2021
Reprint 2026 (1000 copies)

Contributors

Mr. Rajeev Dudhalkar
Mr. A. B. Prabhavalkar
Mr. S. Kingsley
Mr. Joy Mancheril
Mr. Rupesh M. Zad

Reviewers

Dr. P. R. Manglani
Dr. Rashmi Shukla

Photographs

ALERT-INDIA Team
Dr. Arvind A. Mahulkar

Published by

Technical Resource &
Training Unit (TRTU),
ALERT-INDIA

"Inclusive Livelihood for Empowerment and Dignity (ILED) Project in Palghar District, Maharashtra"

Supported by

HSBC
HONGKONG AND SHANGHAI BANKING CORPORATION

Prelude

Prevention of deformity is essential to dispel fear about leprosy in the society

Prevention of Disability (POD) continues to be one of the major tasks of leprosy control and key to combat stigma attached to leprosy. Therefore, POD is as important as early diagnosis of leprosy and treatment with Multi-Drug Therapy (MDT).

Health workers at all levels – primary, secondary and tertiary – are duty bound to learn, instruct and counsel the leprosy affected persons at an appropriate time and to provide or refer for adequate care.

The teams at Leprosy Referral Centres (LRCs) have a special role to play, both in prevention of new disability among new leprosy patients and prevention of worsening of existing disabilities (POWD) among the leprosy affected persons. It necessitates training, guiding and assisting the public health personnel on the interventions related to deformity prevention and care.

This booklet contains simple guidelines and instructions for the medical and paramedical personnel who have a responsibility to identify the early nerve damage and guide them to treat leprosy related complications. It provides practical tips with pictorial presentations to teach, counsel and guide the leprosy affected persons on self care and preventive measures. It can also help the health workers to guide the persons with similar problems due to other diseases.

We are confident that the medical functionaries at all levels find fourth edition of this guide useful to provide quality care to all leprosy affected with complications and their consequences. In the long run, this will contribute to reduction of stigma, minimise displacement and maximise social assimilation of the leprosy affected persons.

15th January, 2021
Mumbai

A. Antony Samy
Chief Executive
ALERT-INDIA

जबकि कुष्ठरोग ''महारोग'' का कठिन कवच भेदकर उन्मूलन की दहलीज पर खड़ा है.. तब विकृति क्यों ?

आम तौर पर कुष्ठरोग के संक्रमण से प्रभावित अधिकांश नए रोगी एम.डी.टी. के उपचार से रोग-मुक्त हो रहे हैं और उनमें किसी प्रकार की विकृति उत्पन्न नहीं हो रही है। लेकिन, इसके लिए आवश्यक है की कुष्ठरोग का शीघ्र निदान और उपचार हो।

फिर भी कुछ मरीजों में बीमारी से लड़ने की क्षमता में होने वाले बदलाव के कारण कुष्ठरोग प्रतिक्रिया (Lepra-reactions) के अलावा तंत्रिका शोथ (Neuritis) जैसी जटिलताओं के पैदा होने की संभावना रहती है। ऐसे मरीजों में हमेशा विकृति उत्पन्न होने का खतरा बना रहता है।

विकृति के खतरे की संभावना वाले (High Risk for deformity) कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति से नियमित रूप से संपर्क बनाए रखना जरूरी है। जटिलताओं की शीघ्र रोकथाम के लिए पूर्ण व उचित इलाज और भौतिक उपचार द्वारा विकृतियों से बचाव हो सकता है।

कुष्ठरोग के कारण पैदा हुई क्षति (Impairment) की उचित देखभाल और व्यवस्थापन की जिम्मेवारी स्वास्थ्य कार्यकर्ता के साथ-साथ कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति की भी है। इसलिए अक्षमता (Disability) और विकृति (Deformity) के परिणामों से बचाव के लिए स्वास्थ्य कार्यकर्ता और कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति, दोनो ही सहयोगी बनकर प्रयास करें।

आइए! विकृति उन्मूलन का संकल्प लें!

	मार्गदर्शन विषय	पृष्ठ क्र.
1.	स्वास्थ्य कर्मचारी के लिए	1
2.	कुष्ठरोग की जटिलताओं का व्यवस्थापन	11
3.	कुष्ठरोग संदर्भन सेवा केंद्र (LRC)	17
4.	आंख की विकृति वाले व्यक्ति के लिए	20
5.	संवेदनाहीन हाथ वाले व्यक्ति के लिए	23
6.	हाथ में विकृति वाले व्यक्ति के लिए	28
7.	संवेदनाहीन पैर वाले व्यक्ति के लिए	32
8.	विद्युतधारा से स्नायुओं का उत्तेजन (EMS)	37
9.	मोम स्नान उपचार (Wax-bath Therapy)	42
10.	पुनर्रचनात्मक शल्यक्रिया - किसे चुनें ?	44
11.	कुष्ठरोग नियंत्रण पर नजर रखना	45
12.	कुष्ठ का निदान और वर्गीकरण - एक सरल फ्लोचार्ट	48

कुष्ठरोग का निदान

शारीरिक परीक्षण के द्वारा बहुत ही सरलता से किया जा सकता है।

1. संवेदना की जांच करना:

दाग अथवा प्रभावित अंग की संवेदना में बाधा/सुन्नपन की जांच करके ज्यादातर रोगियों में कुष्ठरोग का निदान आसानी से किया जा सकता है।

2. तंत्रिका की जांच करना:

कुछ रोगियों में प्रभावित तंत्रिका, तंत्रिका से संबंधित अंगों में संवेदना और मांसपेशियों की कार्यक्षमता की जांच करके भी कुष्ठरोग का निदान किया जा सकता है।

अगर त्वचा पर कुष्ठ के कोई अन्य लक्षण नही हैं, केवल तंत्रिका मोटी हो गई है, प्रभावित तंत्रिका से संबंधित भाग में सुन्नपन भी नहीं है, तथा / या मांसपेशियों में कमजोरी है, तो यह अपने आप में कुष्ठ रोग का कोई विश्वसनीय लक्षण नहीं है।

3. त्वचा विलेपन (skin smear) की जांच करना :

अधिकांश रोगियों में ऊपर बताए दोनो परीक्षणों से कुष्ठ रोग की पुष्टि हो जाती है लेकिन कुछ रोगियों में निम्न लक्षण मिल सकते हैं -

- त्वचा के स्वरूप में बदलाव (तैलीय, लाल, मोटी त्वचा)।
- शरीर पर भरपूर दाग हैं लेकिन संवेदना सामान्य है।

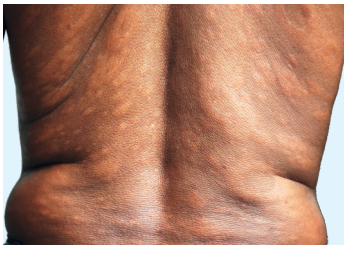

ऐसे रोगियों में कुष्ठ के कीटाणु की मौजूदगी का पता लगाने के लिए त्वचा विलेपन (skin smear) नमूने की जांच प्रयोगशाला में सूक्ष्मदर्शी यंत्र के द्वारा की जाती है। इससे कुष्ठरोग की पुष्टि हो जाती है।

दिखाई देने वाले लक्षणों के आधार पर निश्चित निदान न हो पाए तो रोगी को संदिग्ध मान कर छः महीने तक उसकी नियमित समीक्षा करें। दूसरा विकल्प है कि.....
उसे सबसे नजदीक के रेफरल केन्द्र में जाने के लिए कहें।

त्वचा की संवेदन क्षमता की जांच बॉलपेन की नोक से करें।

ध्यान रहे, जांच दोहराते समय छूने (स्पर्श) का क्रम, लय, दो स्पर्श में अंतर और जगह में जानबूझकर बदलाव करते रहें।

पहली बार रोगी को उसकी आँखे खुली रखवा कर (नजरों के सामने) समझाएं कि आप संवेदन क्षमता की जांच किस तरह से करना चाहते हैं।

- बॉलपेन की नोक से सर्वप्रथम सामान्य त्वचा को हल्के से छुएं।
- रोगी को कहें कि उसे बॉलपेन की नोक से जिस जगह स्पर्श महसूस हुआ (छुआ) उस जगह को उंगली से बताए।
- इसे एक-दो बार दोहराएं और यह सुनिश्चित करें कि रोगी ने आपकी बात अच्छी तरह से समझ ली है।

दूसरी बार रोगी को आँखें बंद करने के लिए कहें और उपरोक्त क्रिया दोहराएं। उसे जिस जगह स्पर्श महसूस हो उस जगह को उंगली से बताने को कहें।

- फर्क जानने के लिए सामान्य त्वचा और त्वचा के सभी दागों पर इस जांच को दोहराएं।
- त्वचा की संवेदन क्षमता किस जगह समाप्त हो गई है या कम हो गई है इसकी तुलना करने के लिए दाग के अलावा सामान्य त्वचा और शरीर के ठीक विपरीत हिस्से में उसी जगह के दूसरे भाग को भी चुनें।

- अगर पीठ पर या शरीर के पिछले भाग पर दाग हो तो रोगी को बॉलपेन की नोक से किए गए जो स्पर्श महसूस हुए उनकी गिनती जोर से करने को कहें या आवाज देकर सूचित करने के लिए कहें।

विशेष स्थितियां :

- **बच्चों में पहले प्रभावित त्वचा और उसके बाद सामान्य त्वचा की जांच करें।**
- **चेहरे के दाग में सुन्नता का पता लगाने में कठिनाई हो सकती है।**

दाग/धब्बे में या प्रभावित तंत्रिका से संबंधित भाग में सुन्नपन है तो यह कुष्ठरोग का निश्चित लक्षण है।

तंत्रिका के कार्य

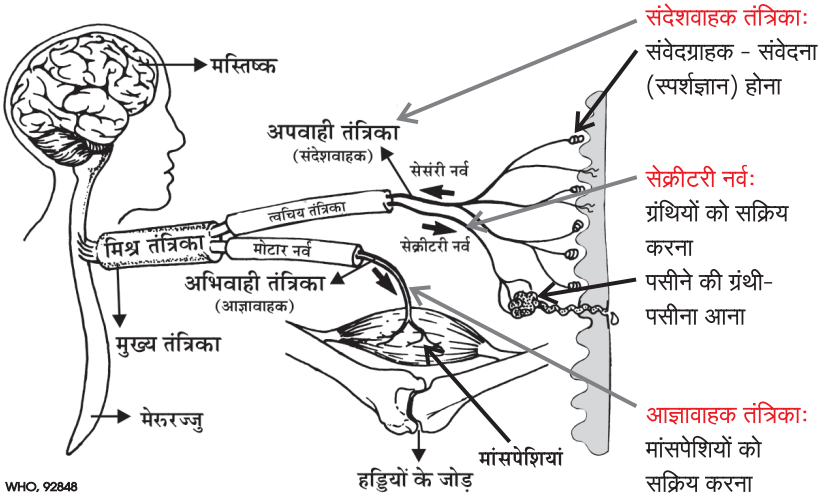

कुष्ठरोग में विकृति का मूल कारण है तंत्रिका में क्षति जिसके कारण कार्य करने में बाधा उत्पन्न होना।

कुष्ठरोग में तंत्रिकाओं की क्षति के चरण

प्रभावित तंत्रिका	→ क्षतिग्रस्त तंत्रिका	→ तंत्रिका नष्ट होना
• मोटी तंत्रिका • दर्द करने वाली तंत्रिका • छूने से दर्द देने वाली तंत्रिका	• पसीना आने में बाधा • संवेदन में बाधा • मांसपेशियों में कमजोरी	• तंत्रिका के कार्य में पूर्ण खराबी **(एक साल से ज्यादा समय)** • तंत्रिका का खात्मा
कार्यक्षमता में बाधा नहीं	**कार्यक्षमता में बाधा**	**विकलांगता**
साधारण स्थिति रखना संभव	स्थिति में सुधार संभव	स्थिति में सुधार संभव नहीं

विकृति से बचाव और विकृति की रोकथाम के लिए

समय पर जांच एवं पूर्ण उपचार करें।	**प्रभावित अंग की नियमित स्वयं देखभाल, इलाज और भौतिकोपचार (Physiotherapy) करें।**

- **कुष्ठरोग की विकृति, कुष्ठरोग या कुष्ठरोग की संक्रामकता का लक्षण नहीं।**
- **कुष्ठरोग और कुष्ठरोगियों के प्रति सामाजिक घृणा का मूल कारण विकृति है।**

कुष्ठरोग में प्रभावित होने वाली मुख्य तंत्रिकाओं की जांच करें

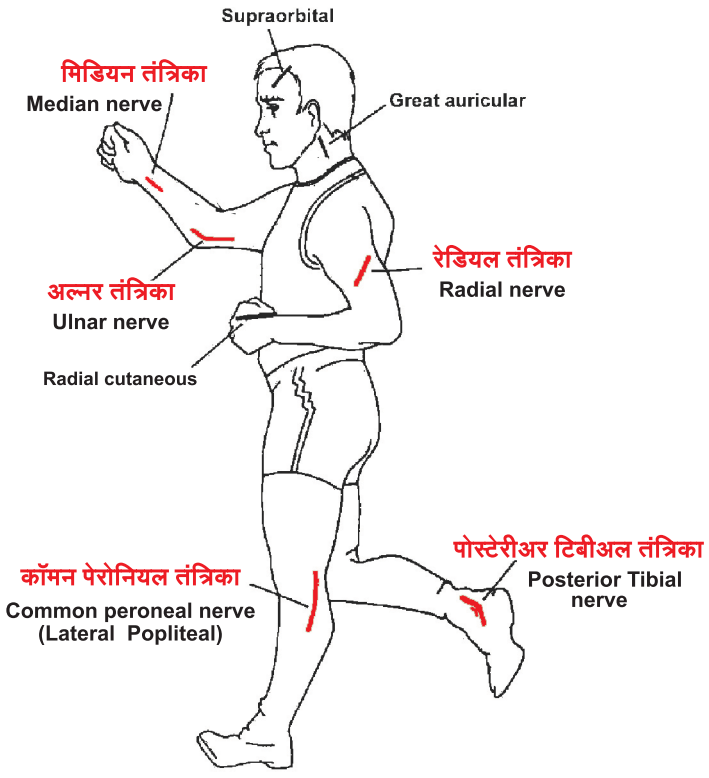

तंत्रिका जांच के लिए :

- अंगुलियों के पोरों का इस्तेमाल करें।
- तंत्रिका को हल्के से टटोलें।
- तंत्रिका की दिशा में टटोल कर तंत्रिका की मोटाई और कोई असामान्य लक्षण की जांच करें। दोनों तरफ की तंत्रिकाओं की तुलना करें।
- रोगी के चेहरे को देखें ताकि तंत्रिका टटोलने से उसे होने वाले दर्द /पीड़ा का पता चले।
- तंत्रिका को गुदगुदाएं नहीं और न ही बहुत ज्यादा दबाव डालें क्योंकि इससे करंट लगने जैसा अनुभव होगा और उस स्थिति में आप रोगी की प्रतिक्रिया का गलत अर्थ भी लगा सकते हैं।

मुख्य तंत्रिकाओं की नियमित रूप से जांच करें और उसे दर्ज करें

Trunk Nerve	Ulnar		Median		Radial		Lateral Popliteal		Posterior Tibial		Other	
	Rt	Lt	Rt	Lt	Rt	Lt	Rt	Lt	Rt	Lt	Rt	Lt
N / E / P / T												
विकृति का विवरण Deformity Present												

तंत्रिका :- सामान्य मोटी Thickened / दर्द करने वाली स्पर्श वेदना
Nerve :- Normal (N) Enlarged (E) Painful (P) Tender (T)

मुख्य तंत्रिकाओं की जांच

अल्नर (Ulnar) : रोगी से कोहनी मोड़ने के लिए कहें। अल्नर तंत्रिका कोहनी की हड्डी और मध्य एपिकोन्डाइल के बीच से गुजरती है। कोहनी मोड़ने पर बनी नाली में अल्नर तंत्रिका को टटोल कर उसकी जांच करें।

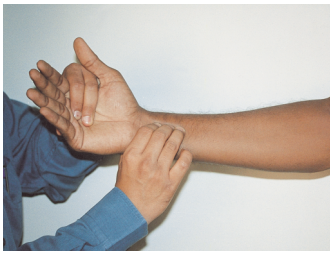

मीडियन (Median) : रोगी को अपनी हथेली को कलाई में अंदर की ओर मोड़ने के लिए कहें। मीडियन तंत्रिका पामारिस लौंगस के समांतर और अंगूठी वाली अंगुली (अनामिका) की सीध में स्थित होती है। इसलिए मीडियन तंत्रिका को पामारिस लौंगस के समांतर अंगूठी वाली अंगुली के सीध में टटोल कर जांच करें।

रेडियल (Radial) : रोगी से बाँह को मोड़ कर अन्दर की ओर घुमाने के लिए कहें। रेडियल तंत्रिका रेडियल खांचे (groove) या नाली में तिरछी होकर गुजरती है। डेल्टॉइड मांसपेशी के प्रवेश (insertion) की जगह रेडियल तंत्रिका की टटोल कर जांच करें।

कॉमन पेरोनियल (Common Peroneal) : रोगी को घुटने को थोड़ा सा मोड़ने के लिए कहें। पिंडली के पिछले हिस्से में फिब्यूला की गर्दन (neck of fibula) के पास मुड़ती हुई पेरोनियल तंत्रिका की टटोल कर जांच करें।

पोस्टीरियर टीबियल (Posterior Tibial) : रोगी को टखने को थोड़ा सा मोड़ने के लिए कहें। यह तंत्रिका मध्य गुल्फिका (malleolus) तथा कल्केनियम (calcaneum) के बीच से गुजरती है। मध्य गुल्फिका के पीछे पोस्टीरियर टीबियल तंत्रिका की टटोल कर जांच करें।

तंत्रिकाओं का कार्यक्षेत्र

संवेदना क्षमता जांच बिंदु

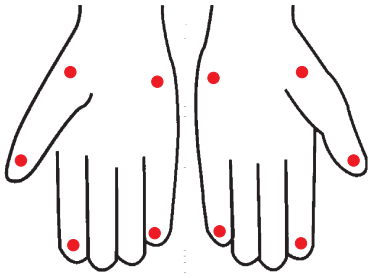

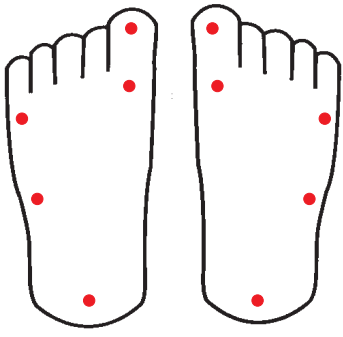

संवेदना क्षमता जांच बिंदु पर बॉल पॉइन्ट पेन की नोक का प्रयोग करके संवेदना की जांच करें और उसे दर्ज करें।

संवेदना है ✓ **संवेदना नहीं है ✗**

ऐच्छिक मांसपेशियों की तंत्रिकाओं से संबंधित कार्यक्षमता की जांच

(Voluntary Muscle Testing - VMT)

फेशिअल तंत्रिका की मांसपेशियां : प्रतिरोध की स्थिति में आँख की पलक को बंद रखने के लिए कहें।

अल्नर तंत्रिका की मांसपेशियां : हथेली की सतह में छोटी उंगली/कनिष्ठिका को बाकी उंगलियों से प्रतिरोध की स्थिति में दूर हटाए रखने के लिए कहें।

मिडियन तंत्रिका की मांसपेशियां : हथेली के सतह से अंगूठे को प्रतिरोध की स्थिति में ऊपर उठाए रखने के लिए कहें।

रेडियल तंत्रिका की मांसपेशियां : हथेली को प्रतिरोध की स्थिति में ऊपर उठाए रखने के लिए कहें।

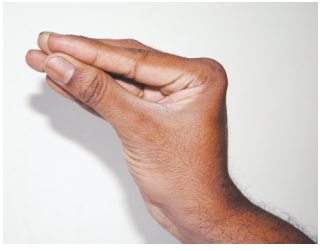

हाथ और उंगलियों की इस स्थिति में तीनों तंत्रिकाओं से संबंधित मांसपेशियों की कार्यक्षमता की जांच एक साथ आसानी से की जा सकती है।

1) सभी उंगलियां पास आती हैं। **अल्नर** संबंधित मांसपेशियों की कार्यक्षमता सामान्य हैं।
2) अंगूठा उंगलियों के पास आता है। **मिडियन** संबंधित मांसपेशियों की कार्यक्षमता सामान्य हैं।
3) कलाई पर से हाथ ऊपर उठता है। **रेडियल** संबंधित मांसपेशियों की कार्यक्षमता सामान्य हैं।

कॉमन पेरोनियल तंत्रिका की मांसपेशियां: एड़ी में पैर का पंजा प्रतिरोध की स्थिति में ऊपर उठाए रखने के लिए कहें।

पोस्टेरीअर टिबीअल तंत्रिका की मांसपेशियां : पैर की उंगलियों को प्रतिरोध की स्थिति में फैलाए रखने के लिए कहें।

मांसपेशियों की कार्यक्षमता जांच के निष्कर्षों को दर्ज करें।

प्रतिरोध में कार्यक्षम मांसपेशियां	-	मजबूत मांसपेशियां	Strong	(S)
प्रतिरोध में अकार्यक्षम मांसपेशियां	-	कमजोर मांसपेशियां	Weak	(W)
अकार्यक्षम मांसपेशियां	-	निष्क्रिय मांसपेशियां	Paralysed	(P)

स्वास्थ्य कार्यकर्ता को विकृति की रोकथाम के लिए चाहिए कि वे....

शुरुआती अवस्था में कुष्ठरोगियों की खोज करें

विकृति की रोकथाम के लिए कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति पहचानें

1. **विकृति की संभावना वाले**
   पिछले पांच वर्षों में खोज किए गये कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति
   High Risk for deformity

2. **असमर्थता और विकृति वाले**
   कार्यक्षेत्र में सभी जीवित कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति
   विकृति श्रेणी-I और II

नियमित अंतराल से समीक्षा करें

कुष्ठरोग **प्रतिक्रियाएं** (Lepra reactions)

हाथ और पैर की **संवेदना क्षमता** जांच और

आँखें, हाथ और पैर के ऐच्छिक **मांसपेशियों की कार्यक्षमता** की जांच

जटिलताओं का उपचार करें

स्टीरॉइड के साथ तंत्रिका को आराम देने वाले स्लिंग /स्प्लिंट्स का इस्तेमाल और उचित भौतिक उपचार (Physiotherapy)

काउन्सेलिंग (समुपदेशन) करें

- अपरिवर्तनीय परिस्थिति का स्वीकार।
- भविष्य की संभावित जटिलताएं।
- शरीर में किसी भी प्रकार के बदलाव के प्रति सतर्क रहें, उसे गंभीरता से लें और तुरंत चिकित्सक की सलाह लें।

रोगी से संपर्क बनाए रखें

विकृतियों के कारण कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति को सामाजिक और आर्थिक रूप से फिर से समाज का अंग बनने में बाधा आती है। इसलिए विकृतियों पर नियंत्रण पाना अत्यंत आवश्यक है।

सुन्नपन के कारण हाथों और पैरों पर होने वाले परिणामों का घटनाचक्र

ALERT-INDIA LEAP 2007

अगर जख्म... गहरा है, आकार में बड़ा है, जख्म में पस / मवाद है, अंग में सूजन है, बदबू भी आ रही है तो **तुरंत डॉक्टर की सलाह लें**।

अक्षमताओं/विकृतियों को श्रेणीबद्ध करने के तरीके (WHO - 1988)

श्रेणी	हाथ और पैर	आंखें
0	सुन्नपन/असमर्थता/विकृति न होना।	कुष्ठ के कारण आँखों में कोई समस्या न होना।
I	सुन्नपन होना पर विकृति न होना।	
II	दिखने वाली विकृति/ क्षति होना।	दृष्टि का गंभीर रूप से बाधित होना, लॅगऑफथाल्मॉस, आइरिडोसाइक्लाइटिस, कॉर्निया का अपारदर्शी होना।

सतर्कता और सावधानी ही विकृति से बचने का सर्वोत्तम उपाय है।

कुष्ठरोग की जटिलताओं का व्यवस्थापन

- जटिलताएं एम.डी.टी. उपचार के पहले, उपचार के दौरान अथवा उपचार के बाद भी हो सकती हैं। कुष्ठरोग प्रतिक्रियाएं (Lepra reactions) एम.डी.टी. के कारण नहीं होती। एम.डी.टी. उपचार पूरा न हुआ हो तो एम.डी.टी. जारी रखें।
- विकृति के खतरेवाले कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति की नियमित अंतराल में संवेदन क्षमता (जांच बिंदु) और ऐच्छिक मांसपेशियों (स्नायुओं) की कार्यक्षमता की जांच करें।
- Steroid /Clofazimine के द्वारा इलाज करें।
- भौतिक उपचार और स्प्लिंट्स इस्तेमाल करने की सलाह दें।
- काउन्सेलिंग करें।

स्टीरॉइड (प्रेड्नीसोलोन) : कब और कैसे ?

कुष्ठरोगियों में निम्नलिखित तरह की कोई भी जटिलता दिखाई दे तो तुरंत स्टीरॉइड से इलाज शुरू करें।

- **तंत्रिका शोथ (Neuritis)** के लक्षण के अलावा तंत्रिका में दर्द।
- **मूक तंत्रिका शोथ (Silent Neuritis)** दर्द रहित तंत्रिका में तंत्रिका क्षति के लक्षण।
- **रोग प्रतिक्रिया प्रकार - I** पुराने धब्बों / दागों पर लाली, सूजन और नये धब्बे / दाग।
- **रोग प्रतिक्रिया प्रकार - II** त्वचा पर दर्द करने वाली गुलाबी गांठें (ENL), हाथ-पैर में सूजन।

कुष्ठरोगियों में विकृति की रोकथाम की जा सकती है।
इसके लिए आवश्यक है कि समय पर जांच एवं पूर्ण इलाज हो।

पिछले पांच वर्षों में खोजे गये कुष्ठरोगियों में विकृति के खतरे वाले कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति (High Risk for deformity) **की पहचान करें, सूची बनायें और छ : माह में कम से कम एक बार सभी की जांच करें।**

- कुष्ठरोग प्रतिक्रिया के रुग्ण या प्रतिक्रिया का इतिहास (+++)
- सामान्य लेकिन दर्द करने वाली तंत्रिका के मरीज (+++)
- मोटी व दर्द करने वाली तंत्रिका के मरीज (+++)
- 'मूक तंत्रिका शोथ' (Silent Neuritis) के लक्षण वाले मरीज (+++)

- चेहरे पर / तंत्रिका के मार्ग पर धब्बे / दाग वाले मरीज (++)
- मोटी तंत्रिका वाले मरीज (++)
- संक्रामक मरीज (एमबी) - 6 या ज्यादा कुष्ठरोग के धब्बे / दाग
  - गर्भवती औरत (++)
  - किशोर अवस्था के मरीज (++)
  - सिर्फ त्वचा पर धब्बे / दाग वाले मरीज (+/-)

खतरा अनिश्चित (+/-)	मध्यम खतरा (++)	ज्यादा खतरा (+++)

प्रतिक्रियाओं को शुरू करने वाले कारण (यह सूची संपूर्ण नहीं है)

- अन्य रोगों (मलेरिया, टायफॉइड इत्यादि) का संक्रमण
- आंतों के कीड़े
- शारीरिक / मानसिक तनाव
- यौवनावस्था की शुरुआत
- गर्भावस्था, प्रसव
- टीके लगना
- सर्जरी, केआई (Potassium Iodide) जैसी दवाएं

इन कारणों के बारे में पूछताछ करें, क्योंकि जरूरी नहीं कि प्रतिक्रिया के दौरान वे रोगी में स्पष्ट दिख रहे हों।

प्रतिक्रिया से पीड़ित सभी रोगियों के मामलो में फिजियोथेरेपिस्ट द्वारा तंत्रिका व मांसपेशियों का विस्तृत आकलन (जांच-पड़ताल) करने की जरूरत होती है।

प्रतिक्रियाएं - एक गंभीर मामला

टाइप - I और टाइप - II किस्म की प्रतिक्रियाएं एमडीटी के पहले, उसके दौरान या उसके बाद भी हो सकती हैं।

रोग प्रतिक्रिया प्रकार - I (Lepra reaction Type - I)

कब होती है:

- आम तौर पर एमडीटी शुरू करने के बाद, पहले छः महीनों में।
- एकाएक और बार-बार हो सकती है।

प्रकट लक्षणों में आने वाला बदलाव:

- त्वचा पर मौजूद दाग उभर आते हैं, लाल हो जाते हैं और उनमें सूजन आती है।
- **तंत्रिका शोथ (Neuritis) मूक (silent) या लक्षणीय (overt), प्रतिक्रिया के साथ होने वाला एक आम लक्षण है। तंत्रिका शोथ के साथ मांसपेशियां अचानक लकवाग्रस्त भी हो सकती हैं।**
- यदि दर्द तथा वेदना बहुत ज्यादा है और यदि न्यूराइटिस के बाद लकवा या सुन्नपन होने की आशंका है, तो प्रतिक्रिया को गंभीर माना जाता है।
- नए दाग प्रकट हो सकते हैं।
- आम तौर पर पूरे शरीर को प्रभावित करने वाली शिकायतें होने की संभावना कम रहती है।
- गंभीर प्रतिक्रिया में नेक्रोसिस और जख्म आम तौर पर नहीं होते।

रोग प्रतिक्रिया प्रकार - II (Lepra reaction Type - II / ENL)

कब होती है:

- आम तौर पर एमडीटी शुरू करने के छः महीने बाद।
- यह लगातार भी हो सकती है और रुक-रुक कर भी।

प्रकट लक्षणों में आने वाला बदलाव:

- ईएनएल (Erythema Nodosum Leprosum - ENL) नामक लाल पीड़ादायी दाने / गांठें समूह में उभर आते हैं।
- ये शरीर के दोनों ओर तथा बराबर होते हैं।
- पहले से मौजूद त्वचा के दागों में कोई बदलाव नहीं आता।
- जोड़ों में सूजन आ जाती है और बुखार के साथ कंपकपी आना एक आम बात है।
- **तंत्रिका, मांसपेशी, हड्डी, आँख (Iritis / Iridocyclitis), लीवर, अंडकोष और तिल्ली जैसे शरीर के अन्य अंग भी प्रभावित हो सकते हैं।**
- गंभीर प्रतिक्रिया में ईएनएल जख्म में बदल सकते हैं।

अगर प्रतिक्रिया बार-बार हो, तो रोगी को सबसे निकट के रेफरल सेंटर में भेजें।

प्रतिक्रिया के लिए उपचार

रोग प्रतिक्रिया प्रकार - I (Lepra reaction Type - I)

शुरूआती खुराक - रोग प्रतिक्रिया की गंभीरता के अनुसार प्रेड्निसोलोन (Prednisolone) शरीर के वजन के अनुसार न्यूनतम 1 mg प्रति किलो। 40-60 mg प्रतिदिन सुबह (एक साथ)।

बाद में धीरे धीरे खुराक कम करना - रोग प्रतिक्रिया में सुधार के अनुसार 20 से 24 सप्ताह तक हर 2 या 4 सप्ताह में प्रेड्निसोलोन 5-10 mg मात्रा से कम करते जाना।

रोग प्रतिक्रिया प्रकार - II (Lepra reaction Type - II)

शुरूआती खुराक - क्लोफाजिमाईन 300 mg (100 mg TDS - दिन में तीन बार) प्रतिदिन और रोग प्रतिक्रिया की गंभीरता के अनुसार प्रेड्निसोलोन 40 mg।

बाद में धीरे धीरे खुराक कम करना - रोग प्रतिक्रिया में सुधार के अनुसार धीरे धीरे खुराक कम करें। क्लोफाजिमाईन 100 mg हर 4 से 8 सप्ताह के बाद कम करें (कुल 24 से 30 सप्ताह के लिए) और प्रेड्निसोलोन 5-10 mg हर 2 या 4 सप्ताह के बाद कम करें (कुल 16 से 20 सप्ताह के लिए)।

प्रेड्निसोलोन के दुष्परिणाम

- चेहरा गोल हो जाना (Moon face)
- संक्रमण का बढ़ना
- पेप्टिक अल्सर
- वजन बढ़ना
- रक्त शर्करा का बढ़ना
- इग्जोफथाल्मोस
- रक्तचाप बढ़ना (Hypertension)
- मुँहासे (Acne / Striae)
- हार्मोन में असंतुलन
- अम्लता का बढ़ना
- ऑस्टियोपोरोसिस
- हाथों / पैरों में सूजन (oedema)

उपचार जारी रखने संबंधित सूचनाएं

1. कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति की पूरी तरह जांच करें और तंत्रिका के संवेदी तथा आवेगी कार्य का मूल्यांकन करें।
2. स्टीरॉइड थेरेपी उपचार को अचानक बंद न करें। खुराक की मात्रा या अवधि में अचानक बदलाव न करें। गंभीर रूप से दुष्परिणाम का पता लगने पर सबसे नजदीकी कुष्ठरोग संदर्भन सेवा केंद्र (LRC - Leprosy Referral Centre) में भेजें।
3. दवा के दुष्परिणाम और उपचार की नियमितता के बारे में बताएं। यदि हालत ज्यादा खराब हो जाए तो नजदीक के कुष्ठरोग संदर्भन सेवा केंद्र में भेजें।
4. नमक का सेवन कम करें।

तंत्रिका में दर्द वाले मरीज का स्टीरॉइड के साथ उपचार, तंत्रिका को आराम देनेवाले स्लिंग का इस्तेमाल और सही भौतिक उपचार करें।

सुन्न, बधिर हाथ-पैर की सुरक्षा के लिए प्रतिदिन ध्यान दें...
हाथ-पैर में जख्म / घाव या हानि से बचें...

रोगी को पहली बार दवाखाने में या पट्टी बांधनेवाले से पट्टी बांधना सिखाएं। इससे रोगी को पट्टी बंधवाने के लिए बार-बार आना नहीं पड़ेगा, जख्म को आराम मिलेगा और जख्म ठीक होने में मदद मिलेगी।

जख्म / घाव की मरहमपट्टी करने के लिए...

जख्म / घाव को साफ करें

सेवेलॉन जैसे जंतुनाशक लोशन से कपास के गोले को गीला करें और जख्म / घाव को अंदर और बाहर से साफ करें।

कीटाणुनाशक दवा लगाएं

कपड़े की पट्टी के टुकड़े पर कीटाणुनाशक दवा (मरहम) लगाकर जख्म / घाव को ढंककर रखें।

कपड़े की पट्टी से जख्म / घाव को बांधें

जख्म / घाव को ढंकने के लिए उस पर रखे गए कीटाणुनाशक दवा के कपड़े का टुकड़ा गिरे नहीं इसके लिए उसे कपड़े की पट्टी से बांधें।

बहुत कसकर पट्टी बांधने से या जरुरत से ज्यादा पट्टी बांधने से विकृति आ जाती है और अधिक नुकसान होता है। इसके अलावा जख्म / घाव में पर्याप्त रक्तसंचार न होने से जख्म / घाव जल्द ठीक नहीं होता है।

- **एक सप्ताह से ज्यादा समय सूजन हो।**
- **जख्म / घाव से मवाद आता हो।**
- **जख्म / घाव से बदबू आती हो तो,** तुरंत नजदीक के अस्पताल (दवाखाना) में डॉक्टर को दिखाएं या कुष्ठरोग संदर्भन सेवा केंद्र में जाएं।

एक बेहतर जिंदगी के लिए यह जरुरी है कि हम किसी भी जख्म/घाव के कारण होनेवाले नुकसान से रोगी को बचाएं।

साफ किए गए और उसमें गंदगी न जाए इसलिए ढंके गए किसी भी घाव/जख्म को उचित आराम देने पर वह जल्द ठीक हो जाता है।

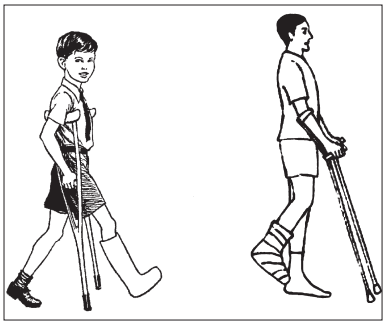

बैसाखी या लाठी का उपयोग करें...

एक ही जगह पर खड़े रहने पर पैर के जख्म/घाव पर दबाव पड़ता है। इसे टालने के लिए खड़े रहने के बजाय बैठना ज्यादा उपयुक्त होगा। चलते समय जख्म/घाव पर पड़ने वाले दबाव/भार को टालने के लिए बैसाखी या लाठी का प्रयोग करें।

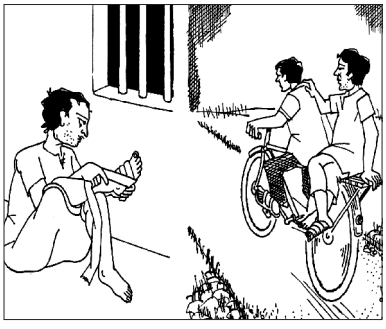

वाहन का इस्तेमाल करें...

पैरों में जख्म / घाव हो तो बेवजह न चलें और यदि बहुत जरुरी हो तो यात्रा करने के लिए उपलब्ध वाहन का उपयोग करें। छोटे-छोटे कदमों से चलें और थोड़े-थोड़े अंतराल पर आराम करते हुए चलें। इससे जख्म / घाव पर अधिक दबाव नहीं पड़ता।

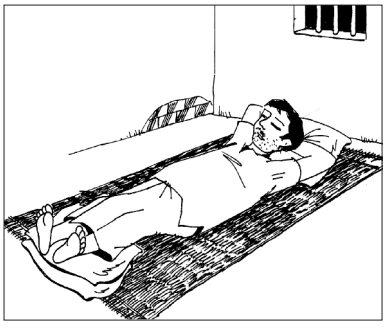

पैर में सूजन आने पर तकिए का उपयोग करें...

पैर में अगर सूजन हो तो उस सूजन को कम करने के लिए सोते समय पैरो के नीचे तकिया रखें।

- अगर पैर में जख्म / घाव हो तो बूट के बजाय पैर के आकार के अनुसार पट्टे का आकार कम-ज्यादा करने की सुविधा वाले सैंडल का प्रयोग करना बेहतर होगा। इससे जख्म / घाव पर अधिक दबाव नहीं पड़ता।
- टखने के नीचे लूले हो गए पैरों के लिए ऐसे चप्पल या सैंडल का प्रयोग करें जिसमें पैर को ऊपर उठाकर पकड़ने की सुविधा हो।

इस तरह से जख्म / घाव को आराम देकर उसे ठीक करने की कोशिश करें और इस बात का ध्यान रखें कि फिर से जख्म / घाव न होने पाए।

कुष्ठरोग संदर्भन सेवा केंद्र (LRC)

द्वितीय स्तर पर गुणवत्तापूर्ण सेवाओं के लिए संदर्भन व्यवस्था

LRC में आम स्वास्थ्य सेवाएं देनेवाले व्यक्तियों को विशेष प्रशिक्षण

कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों को गुणवत्तापूर्ण सेवाएं प्रदान करने के लिए और उसे निरंतर सुचारू रूप से टिकाए रखने हेतु जनस्वास्थ्य सेवा के सभी स्तर पर वैद्यकीय तथा स्वास्थ्य कर्मचारियों का प्रशिक्षण आवश्यक है।

द्वितीय स्तर पर (ब्लॉक / तहसील) सरकारी जन साधारण स्वास्थ्य सुविधाओं के अंतर्गत कुष्ठरोग संदर्भन सेवा केंद्र (LRC - Leprosy Referral Centre) स्थापित कर उनको सुचारू रूप से चलाने का प्रबंधन करना।

1. रोग निदान और प्रबंधन के लिए

संदर्भित करें - कुष्ठ के ऐसे मामले जिसका निदान कर पाना कठिन हो और जिसके लिए प्रयोगशाला में सूक्ष्म जीवाणु (Acid Fast Bacilli - AFB) की जांच की जरूरत है।

उपलब्ध सेवाएं - विशेष प्रशिक्षित और अनुभवी व्यक्ति द्वारा रोगी की पूर्ण शारीरिक जांच और त्वचा के उतक (Slit Skin Smear) नमूनों का प्रयोगशाला में जीवाणु (AFB) परीक्षण।

विभिन्न स्तरों पर कार्यरत सामान्य स्वास्थ्य सेवा कर्मचारियों को सम्मिलित तरीके से कुष्ठ की निरंतर और गुणवत्तापूर्ण सेवाएं प्रदान करने हेतु प्रशिक्षित करना बहुत ही महत्त्वपूर्ण और आवश्यक है।

संदर्भित करें - अतितीव्र या दीर्घकालीन प्रतिक्रिया (Lepra Reactions), कुष्ठ का पुनर्उद्भव (relapse) और एम.डी.टी. (MDT) दवाओं के साईड इफेक्ट के लक्षण मिलें।

उपलब्ध सेवाएं - पूर्ण शारीरिक जांच और उचित चिकित्सकीय उपचार, आवश्यकतानुसार स्प्लिंट्स का उपयोग और काउनसेलिंग।

2. असमर्थता और विकृति से बचाव के लिए

संदर्भित करें - तंत्रिकाओं की क्षति के संभावित रोगी (High Risk for deformity), विशेष रूप से MB के रोगी।

उपलब्ध सेवाएं - तंत्रिका कार्य में क्षति (संदेशवहन और आज्ञावहन) पता लगाने के लिए कम से कम 6 माह में एक बार जांच।

संदर्भित करें - कुष्ठ के कारण केवल सुन्नपन (श्रेणी-I) और दिखाई देनेवाली विकृति (श्रेणी-II)।

उपलब्ध सेवाएं - मरीज को खुद की देखभाल और कसरत करना सिखाना। भौतिकोपचार जैसे कि व्यायाम, मोम सिंकाई (Waxbath), मांसपेशियों को विद्युत धारा से उत्तेजित करना (Electrical Muscle Stimulation) और स्प्लिंट्स द्वारा इलाज।

3. विशिष्ट सेवाओं - उपचार के लिए संपर्क रखना

संदर्भित करें - अवांछित या दूसरे दर्जे की अंग विकृतियों वाले मामले जैसे कि तलवे में घाव, हड्डियों के जोड़ में जकड़न और आंख की समस्याएं।

उपलब्ध सेवाएं - हाथ और पैर के लिए स्प्लिंट्स, मरहम पट्टी के लिए किट, काला चश्मा और MCR (Micro Cellular Rubber) चप्पल / सँडल उपलब्ध कराना।

संदर्भित करें - तलवे के संक्रमित घाव, बार-बार होनेवाली कुष्ठ प्रतिक्रियाएं (reactions), आंख की परेशानियां और सामाजिक समस्याएं।

उपलब्ध सेवाएं - स्वयंसेवी संस्थाओं / तृतीय स्तरीय उपचार केंद्रों से संपर्क करना और विशिष्ट सेवाओं के लिए मरीज को उनके पास भेजना।

NLEP का मुख्य उद्देश्य है जनसाधारण स्वास्थ्य सेवा व्यवस्था के अंतर्गत कुष्ठ संदर्भन सेवा केंद्रों को सुचारू रूप से बनाए रखकर गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदान करना ताकि कुष्ठबाधित व्यक्तियों में असमर्थता और विकृति की रोकथाम हो और उनका पुनर्वास हो।

विकृति, जख्म, घाव ठीक करने के लिए स्वास्थ्य कार्यकर्ता समझें, सोचें और रोगी को समझाएं...

समझें
- विकृति, जख्म / घाव का स्वरूप।
- विकृति, जख्म का कारण।

सोचें
- विकृति, जख्म / घाव की रोकथाम कैसे करें।
- विकृति, जख्म ठीक करने के लिए आवश्यक उपचार।
- रोगी की रोज़ाना की जरूरतें और व्यवसाय।
- स्थानीय, भौगोलिक, सांस्कृतिक परिस्थिति, जीवन शैली।
- सूचना एवं सुझाव जो वर्तमान परिस्थिति में व्यावहारिक हो।

रोगी को समझाएं
- सामान्य परिस्थिति और कुष्ठरोग से नुकसान के कारण हुए स्थाई बदलाव को स्वीकार करना।
- विकृति, जख्म / घाव होने का कारण - संभावना को ढूंढ़ें और समझें।
- स्वयं देखभाल से जख्म और विकृति की रोकथाम बहुत ही आसान है।
- जटिलताएं और विकृति की जोखिम भरी परिस्थिति में सतर्कता बरतें।

कुष्ठबाधित व्यक्ति अपने सुन्न अंग को, जख्म को.....

आराम दे - प्रभावित अंग को आराम दे और उसे दबाव मुक्त रखे।

साफ सुथरा रखे - कीटाणुओं के संक्रमण से बचने के लिए मरहम या दवा लगाए।

ढंक कर रखे - जख्म में गंदगी न जाए, मक्खियां न बैठें इसलिए जख्म पर पट्टी बांधे।

.....तो कोई भी जख्म निश्चित रूप से ठीक हो जाता है।

विकृति का लंबे समय तक और बार-बार इलाज करने से बेहतर है विकृति आने ही न दें।

स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा आँखों की देखभाल

- **हर बार उपचार केन्द्र आने पर रोगी के आँखों की जांच करें।**
- **रोगी को चेतावनी दे देनी चाहिए कि आँखों में दर्द या लाली होने पर वह तुरंत चिकित्सक के पास जाए।**
- **नजर (Vision) की जाँच करें।**
- **आँखों की स्वयं देखभाल के बारे में रोगी को समझाएं।**

अगर रोगी की आँखें प्रभावित हों तो सतर्कता बरतें। 'आँखों' में बदलाव पर सतर्कता के साथ ध्यान दें। स्वास्थ्य कार्यकर्ता देखें कि रोगी की आँखें लाल तो नहीं या उनमें लॅगऑफथाल्मॉस तो नहीं ?

लाल आंखों वाले रोगी

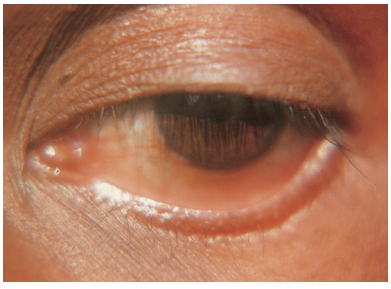

लाल आंखें

टाईप-II प्रतिक्रियाओं में होने वाली आँखों संबंधी आइरिडोसाइक्लाइटिस जैसी गंभीर जटिलताओं का उपचार नेत्र विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार ही करें।

नेत्र विशेषज्ञ या सबसे निकट के रेफरल सेंटर पर भेजें।

आँखों को बिल्कुल बंद न कर पाने वाले रोगी

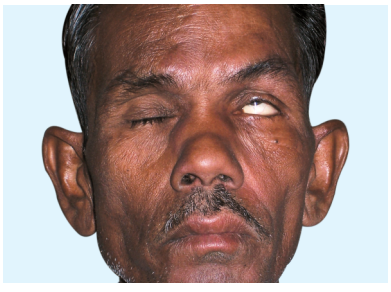

लॅगऑफथाल्मॉस

आँखों को बिल्कुल बंद न कर पाने (लॅगऑफथाल्मॉस) वाले रोगी को बाहरी चीजों से आँखों की रक्षा करने में कठिनाई आती है।

उसकी आँखों में गंभीर क्षति हो जाने और फलस्वरूप दृष्टिहीनता का खतरा (जोखिम) होता है।

फिजिओथेरेपिस्ट द्वारा आकलन के लिए रेफरल सेंटर भेजें।

कुष्ठ रोगियों का अंधा होना अपने आप में एक गंभीर विकलांगता है क्योंकि रोगी यदि देख न पाए और महसूस न कर पाए तो वह सुन्न हाथ या पैर की सुरक्षा कैसे करेगा?

आँखें बंद न कर पाने वाले व्यक्ति के लिए स्वयं देखभाल

रोजाना ध्यान से देखें कि...

- आँखें लाल तो नहीं ?
- आँखों में गंदगी तो नहीं ?
- आँखों की पुतली के आकार में बदलाव तो नहीं ?

- **आँखों को रोजाना 2-3 बार साफ पानी से धोएं।**

दिन में कई बार आँखों की पलकों को खोलने और बंद करने यानी पलक झपकाने के बारे में सोचें और ऐसा ही बार - बार करने की आदत डालें।

- **आँखों को जलन से बचाने के लिए काले चश्मे (गॉगल) का इस्तेमाल करें।**

धूल-कणों तथा तेज रोशनी से आँखों को बचाने के लिए लगातार काला चश्मा लगाएं, आँख ढंकने के लिए टोपी या कपड़े का इस्तेमाल करें।

आँखों में दर्द या लाली होने पर,
या नजर कम होने पर,
तुरंत नेत्र चिकित्सक के पास जाएं।

आँखों को मलिए अथवा रगड़िये नहीं।

- सूखेपन या आँखों में कुछ कण (कचरा) जाने पर या खुजलाहट होने पर आँखों को रगड़ें नहीं।
- साफ पानी से आँखें धोएं।
- तुरंत डॉक्टर की सलाह लें।

उंगली से पलक को बाहर की तरफ खींचें।

पलक को उंगली से बाहर की तरफ खींचें ताकि आँख बंद हो; ऐसा 10 से 12 बार दोहराएं। इससे आँख का सूखापन रोकने में मदद मिलती है और पलकों की मांसपेशियों का व्यायाम होता है।

आई-ड्रॉप्स का इस्तेमाल करें।

सूखेपन को रोकने के लिए डॉक्टर की सलाह से आई-ड्रॉप्स का इस्तेमाल करें।

आँखों को कपड़े से ढंकें।

- आँखों पर मक्खियों को बैठने न दें।
- सोते समय आँखों को साफ और मुलायम कपड़े से ढंकें
- सोते समय चादर से चेहरे को ढंक कर रखें।

आँखों से है जिंदगी में रोशनी,
अपनी जिंदगी में अंधेरा न होने दें!
अपनी आंखों की हमेशा स्वयं देखभाल करें।

अपना हाथ जगन्नाथ

कुष्ठरोग में हाथों की तंत्रिकाओं के प्रभावित होने पर हाथों की संवेदना नष्ट हो जाती है और वे सुन्न हो जाते हैं।

कुष्ठरोग ठीक हो जाने के बाद भी सुन्नपन बना रह सकता है और किसी भी दवा या उपचार से संवेदना पहले जैसी सामान्य नहीं होती। इसलिए सुन्न हाथों का जीवन भर ध्यान रखना जरूरी है।

त्वचा के सुन्नपन और शुष्कता (सूखापन) के कारण फोड़ा/छाले, दरार, जख्म, निशान जैसे प्रभाव हाथ पर हो सकते हैं। खुद प्रयास करके ऐसे हाथों की आप सुरक्षा कर सकते हैं।

यदि आप अपने हाथों की नियमित देखभाल और सुरक्षा करें तो आपको दूसरों के सहारे की जरूरत नहीं पड़ेगी।

विकृति! महज एक दुर्घटना

कुष्ठरोग से होने वाली विकृति बदनसीबी नहीं हैं। यह जिंदगी के सफर में महज एक छोटी सी दुर्घटना है। इसलिए आप निराश न हों।

क्योंकि.....

कुष्ठरोग से आयी हुई विकृति तंत्रिका के प्रभावित होने का परिणाम है। एम.डी.टी. इलाज से कुष्ठरोग पूरी तरह से ठीक हो जाता है। उचित ध्यान देने पर और भौतिक उपचार (फिजीओ-थेरपी) से विकृति में सुधार लाया जा सकता है।

आत्मविश्वास और खुद के प्रयास से आप भी विकृति की चुनौती का मुकाबला करें और विकृतियों पर रोक लगाएं।

सुन्नपन यानी हाथों का अंधापन!
ऐसे हाथों के बचाव के लिए आंखों का उपयोग करें।

सुन्न हाथों की रोजाना स्वयं देखभाल

रोजाना हाथों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करें

- आपके हाथ पर कहीं फोड़ा/छाले, जख्म, दरार या जलने के निशान तो नहीं हैं ? इन लक्षणों को ध्यान से देखें।
- जो हाथ सुन्न नहीं हैं उस हाथ से सुन्न भाग को छूकर देखें। यदि कहीं पर गर्माहट का एहसास हो तो वहां पर फोड़ा/छाला होने की संभावना होती है।
- यदि दोनों हाथ सुन्न हों तो किसी दूसरे व्यक्ति की मदद लें।
- **यदि जख्म मामूली हो तो उसे साफ करें, मरहमपट्टी करें।**
- **लाली, सूजन, फोड़ा/छाले या जख्म दिखाई देने पर हाथ को आराम दें और तुरंत डॉक्टर की सलाह लें।**

सुन्न हाथों की देखभाल स्वयं करें,
मार्गदर्शक सूचनाओं का पालन करें,
अपने हाथ सुरक्षित रखें!

पानी और तेल एक गुणकारी उपचार

(जल-तैल उपचार)

तंत्रिकाओं में क्षति के परिणाम स्वरूप हाथ की त्वचा शुष्क / सूखी हो जाती है। सूखेपन के कारण त्वचा में दरार पड़ने से जख्म हो जाने का खतरा बढ़ता है।

- **ठंडे पानी में हाथों को डुबोएं।** हाथ की त्वचा को नम और मुलायम रखने के लिए हाथों को रोजाना 20 मिनट पानी में डुबोकर भिगोएं।
- **मोटी त्वचा को घिसें।** हथेली की सख्त (कठोर) और मोटी त्वचा को साफ प्लास्टिक ब्रश या प्युमिस पत्थर या जूट के कपड़े से घिसें।

- **वनस्पति तेल से मालिश और व्यायाम करें।** त्वचा की नमी बनाए रखने के लिए पानी में हाथ भिगोने के बाद **गीली त्वचा पर वेसलीन या पैराफिन से हाथों की दस मिनट तक अच्छी मालिश करें और व्यायाम करें।** वेसलीन या पैराफिन उपलब्ध ना होने पर किसी भी वनस्पति तेल (नारियल / तिल /सरसों) का उपयोग करें, लेकिन घर में चूहें ना हों इस बात का ध्यान रखें। घर में चूहें हो तो नीम का तेल लगाएं क्योंकि चूहें सुन्न हाथ या पैर कुतर देते हैं।

जल-तैल उपचार नियमित रूप से करने पर हाथों में नमी बनी रहती है और हाथ में सूखेपन के कारण होने वाली परेशानियों से बचाव होता है।

नंगे हाथ से गरम वस्तुओं को न पकड़ें !

गर्मी, आँच और भाप के कारण हाथ में फोड़ा / छाला हो जाता है।

फोड़ा जख्म की पहली अवस्था है।

रोजाना के कामकाज जो जरूरी हों, उन्हें करते समय सूती कपड़ा / रूमाल / पक्कड़ / संड़सी और चिमटे का इस्तेमाल करें। सुन्न हाथों का बचाव करें।

जख्म का लंबे समय तक और बार-बार इलाज करने से बेहतर है, जख्म / फोड़ा होने ही न दें।

नंगे हाथ से कठोर, खुरदरी और भारी वस्तु को न पकड़ें।

हाथ के सुन्नपन के कारण वस्तु को जोर लगाकर पकड़ना पड़ता है। बहुत जोर या दबाव लगाने या रगड़ के कारण हाथ के पंजे में और उंगलियों में फोड़ा या छाला हो सकता है। इसलिए ऐसी वस्तुओं के इस्तेमाल में सावधानी बरतें।

सख्त / खुरदरी वस्तुओं को ठीक से पकड़ने के लिए दस्ताने (Gloves) / हाथमोजा / सूती नरम कपड़ों की मोटी तह का इस्तेमाल करें।

जल-तैल उपचार और व्यायाम के साथ-साथ स्प्लिंट्स जैसे सरल साधनों के इस्तेमाल करने से विकृतियों को बढ़ने से रोका जा सकता है और उसमें सुधार लाने में मदद मिलती है।

हाथ के व्यायाम - 1 (जोड़ों पर खुल सकने वाली टेढ़ी उंगलियां)

- उंगलियों और पंजों के जोड़ को समकोण पर रखकर उंगलियों को सीधा करें। उंगलियों का पिछला हिस्सा अपनी जांघ पर या किसी सपाट नरम सतह पर रखें।
- उंगलियों को सभी जोड़ों पर मोड़कर हाथ की मुट्ठी बनाएं। 10 तक अंक गिनें और मुट्ठी बनाए रखें।
- फिर मुट्ठी खोलकर सभी उंगलियों को धीरे-धीरे सीधा करें।

इसे रोजाना एक बैठक में कम से कम 50 बार करें।

ऐसा दिन में 3 बार करें।

हाथ के व्यायाम - 2 (जोड़ों में जकड़ी/खुल न सकने वाली टेढ़ी उंगलियां)

- हाथ के पिछले हिस्से को जांघ पर या नरम सतह पर रख कर हाथ को पूरी तरह से खोल दें।
- उस पर दूसरे हाथ के पंजे को हथेली से लेकर उंगलियों के छोर तक एक दिशा में दबाव देते हुए ले जाएं।
- मुड़ी हुई उंगलियों के जकड़े हुए जोड़ों पर अधिक दबाव दें।

इसे रोजाना एक बैठक में कम से कम 50 बार करें।

जल-तैल उपचार और व्यायाम से हाथ की त्वचा की नमी और उंगलियों के जोड़ों को जकड़न से बचाए रखने और उन्हे सक्रिय (mobile) रखने में मदद मिलती है।

स्प्लिट्स का इस्तेमाल

जल-तैल उपचार और व्यायाम के बाद दिन में
कम से कम तीन से चार घंटे स्प्लिट्स का इस्तेमाल करें।

ॲडक्टर बैंड
(उंगलियों की विकृति)

अपोनंस लूप
(अंगूठे की विकृति)

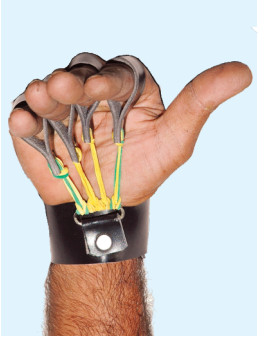

फिंगर लूप
(जोड़ों में खुल सकने वाली टेढ़ी उंगलियां)

फिंगर गटर स्प्लिट्स
(जोड़ों में खुल न सकने वाली टेढ़ी उंगलियां)

- स्प्लिंट्स में इस्तेमाल होने वाले रबर बैंड को बदलना सीख लें। रबर बैंड टूट जाने पर उसे तुरंत बदलें।

अपने स्वास्थ्य कर्मचारियों से ऐसे साधनों की मांग करें और उनका नियमित इस्तेमाल करें।

स्प्लिंट्स के नियमित इस्तेमाल करने से
5 से 6 महीनों में विकृतियों में सुधार आ सकता है।

ध्यान रहे !

- कुष्ठरोग के कारण तंत्रिकाओं की रचना में होने वाले बदलाव या खराबी का सही इलाज करें, नहीं तो विकृति आ सकती है।
- शुरुआती अवस्था में इलाज करने से विकृति को निश्चित रूप से टाला जा सकता है।
- विकृति कुष्ठरोग का निश्चित लक्षण नहीं है। इसी प्रकार विकृति रोग की मौजूदगी और संक्रामकता का सूचक नहीं है।
- पुरानी विकृति अगर बढ़ती दिखे या नई विकृति दिखे तो तुरंत डॉक्टर की सलाह लें।
- विकृति में सुधार लाने के लिए सिर्फ भौतिक उपचार उत्तम उपचार है।
- भौतिक उपचार के बाद यदि तीन महीने में सुधार नजर न आए तो तुरंत स्वास्थ्य कर्मचारी और डॉक्टर को बताएं।
- कुछ विकृतियों को शल्यक्रिया (ऑपरेशन) से भी सुधारा जा सकता है। लेकिन, शल्यक्रिया विकृति का स्थाई इलाज नहीं है।
- विकृति के बारे में अपनी शंकाओं का पूरी तरह से समाधान कर लें।

हमेशा ध्यान दें, देखभाल करें और विकृतियों को बढ़ने न दें।

इन चीजों से सावधानी बरतें।

नुकीले, तेज धारवाले औजार

अलाव / आग

''बढ़ते कदम''

जिंदगी में कामयाब होने के लिए हर आदमी के लिए अपने पैरों पर खड़ा होना बहुत जरूरी है। कुष्ठरोग में पैरों की तंत्रिका के प्रभावित होने पर पैरों के तलवों में सुन्नपन (संवेदनाहीनता) आ सकता है।

कुष्ठरोग ठीक हो जाए तो भी एक बार चली गयी संवेदना किसी भी उपचार से पहले जैसी सामान्य नहीं होती। इसलिए सुन्न पैरों का जीवन भर ध्यान रखना पड़ता है।

सुन्न पैरों को अनजाने में चोट लगने / जख्म होने का खतरा अधिक होता है। कुष्ठरोग में सुन्नपन के कारण पैरों में हुए जख्म को आराम नहीं मिल पाता है इसलिए जख्म को ठीक होने में बहुत समय लग जाता है। इसके अलावा यदि उचित ध्यान न दिया गया तो बार-बार जख्म होने से पैरों की काम करने की क्षमता कम हो जाती है।

हम खुद प्रयास करें तो पैरों के सुन्नपन के कारण पैदा होने वाली समस्याओं से पूरी तरह अपना बचाव कर सकते हैं।

आप दूसरों पर निर्भर रहने की नौबत से बच सकते हैं।

प्रभावित अंग की रोजाना, स्वयं देखभाल करने से...

प्रभावित अंग अधिक सक्षम और सुचारू रूप से काम करने लगेगा।
फलस्वरूप, आत्मविश्वास के साथ आप जीवन में आगे बढ़ सकेंगे।

सुन्न पैरों की रोजाना देखभाल खुद करें

- तलवों को छूकर यह देखें कि क्या कोई हिस्सा गरम लग रहा है।
- अगर आपके हाथ सुन्न (संवेदनाहीन) हों तो इस काम के लिए दूसरे व्यक्ति की मदद लें।

तलवों पर दबाव बिंदुओं की जांच करें।

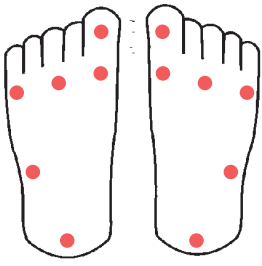

- पैरों की जांच करते समय तलवों पर दबाव बिंदु पर हो रहे बदलाव की तरफ खास ध्यान दें।
- अधिक दबाव पड़ने से तलवों पर दबाव बिंदु की जगह पर जख्म होने का खतरा बढ़ जाता है।
- एम.सी.आर. रबर के जूते चप्पल दबाव बिंदुओं पर पड़ने वाले दबाव को कम करते हैं।

- यह ध्यान से देखें कि कहीं तलवों पर दरारें/लाली/फोड़ा/छाला या जख्म तो नहीं है?

- अगर जख्म मामूली हो तो उसे साफ करके उसकी मरहमपट्टी करें और पैरों को आराम दें।

तलवों पर की लाली या गरम महसूस होने वाला छाला या फोड़ा घाव होने की पूर्वसूचना है। तुरंत डॉक्टर की सलाह लें।

पानी और तेल एक गुणकारी दवा

(जल-तैल उपचार)

तंत्रिका जब कुष्ठरोग से प्रभावित हो जाती है तो सुन्नपन के साथ-साथ पैरों में पसीना आना बंद हो जाता है। इसके कारण पैर की त्वचा सूखी होकर सख्त और मोटी हो जाती है। इसके अलावा त्वचा पर जख्म हो जाने का खतरा ज्यादा होता है। इसे रोकने के लिए प्रति दिन जल-तैल उपचार का प्रयोग करें।

20 मिनट पानी में पैर डुबोएं।

पैरों को रोजाना कम से कम 20 मिनट साफ और साधारण (ठंडे) पानी में पूरी तरह से डुबोकर भिगोएं।

सख्त त्वचा को घिसें।

जूट का कपड़ा, प्लास्टिक ब्रश या नारियल की जटा (काथ) या प्युमिस पत्थर से तलवों की सख्त / मोटी त्वचा को घिसें।

सख्त त्वचा को निकालने के लिए ब्लेड का इस्तेमाल न करें।

पैरों पर तेल लगाएं।

पैरो के तलवों पर और ऊपर के हिस्से पर वेसलीन या पैराफिन लगाकर कम से कम दस मिनट तक अच्छी तरह मालिश करें। वेसलीन या पैराफिन न होने पर वनस्पति तेल (नारियल / तिल / सरसों) या नीम के तेल उपयोग करें, लेकिन घर में चूहे ना हों इस बात का ध्यान रखें।

जल-तैल उपचार को नियमित रूप से करने पर पैरों की त्वचा की नमी बनी रहती है और पैरों को नुकसान होने से बचाया जा सकता है।

ध्यान रखें...

नंगे पैर न चलें। नंगे पैर चलने से पत्थर / कांटे / डामर (तारकोल) की सड़क की गरमी के अलावा नुकीली चीजों से पैरों को नुकसान होने का खतरा रहता है।

- एम.सी.आर. चप्पल / जूतों का इस्तेमाल करें।
- बहुत तेज या बहुत धीरे-धीरे न चलें।
- एक ही बार में ज्यादा दूर तक न चलें। लंबी दूरी तक चलना अगर जरूरी हो तो थोड़ी दूर तक चलने के बाद रुक कर पैरों को आराम दें।

पैर में जख्म या घाव हो तो पैरों को आराम दीजिए। चलते समय लकड़ी या बैसाखी का उपयोग करें और जख्म पर पड़ने वाले शरीर के वजन/दबाव को कम करें।

- वाहन का उपयोग करें।

ज्यादा समय तक खड़े न रहें। सुन्नपन के कारण पैरों के तलवों पर पड़ने वाले अधिक दबाव की हमें जानकारी नहीं हो पाएगी, इसलिए ज्यादा समय तक खड़े न रहें। पैरों को आराम देने के लिए बीच-बीच में बैठ जाएं।

पालथी मार कर न बैठें।

नीचे बैठते समय पालथी मार कर न बैठें या फिर इस बात का ध्यान रखें कि पैरों के टखनों पर दबाव न पड़े।

जमीन पर बैठने के लिए मोटे और नरम आसन का इस्तेमाल करें।

अलाव / आग से दूर रहें।

काम करते समय सावधानी बरतें।

पैरों मे सूजन होने पर सोते समय पैरों को शरीर से ऊंचा रखे, पैरों के नीचे तकिया रखें। ज्यादा न चलें।

घर में चूहें ना हों इस बात का ध्यान रखें। चूहें सुन्न पैरों को कुतर सकते हैं।

पैरों को चोट लगने का खतरा टाला जा सकता है।

जांच कर लें...

- जूते, चप्पल पहनने से पहले जांच कर लें।
- कहीं उसमें कील, या कंकड़ घुसा हुआ तो नहीं है ?

खास रबर से बने एम.सी.आर. (Micro Cellular Rubber) **चप्पल की खासियत**

बाजार में उपलब्ध चप्पल

इन विशेष चप्पलों से सुन्न पैरों की सुरक्षा होती है। एम.सी.आर. चप्पल / जूता / सैंडल के लिए अपने क्षेत्र के स्वास्थ्य कर्मचारी से पूछें

एमसीआर चप्पल

टखनों से लकवा मार गए पैरों के लिए फुटड्रॉप स्लिंग

प्रतिदिन पैरों के तलवों का निरीक्षण करें।
रोजाना जल-तैल उपचार करें।
नंगे पैर न चलें। एम.सी.आर. चप्पलों का नियमित रूप से इस्तेमाल करें। अपने पैर सुरक्षित रखें।

विद्युतधारा से मांसपेशियों का उत्तेजन

(EMS - Electrical Muscle Stimulation)

बीमारी या दुर्घटना के कारण तंत्रिका की उत्तेजना (वहन) ले जाने की क्षमता में कमी आने से या खंडित हो जाने से मांसपेशियों की कार्यक्षमता में बाधा आती है। परिणामस्वरूप अक्षमता के कारण मांसपेशी ठीक से काम नहीं करती हैं, और शिथिल या लकवाग्रस्त होकर बेकार हो जाती हैं। उचित उपचार और मांसपेशी से सम्बंधित तंत्रिका पुनर्जीवित होने पर, तंत्रिका की उत्तेजना ले जाने की क्षमता में सुधार आता है। इसीलिए Electro-Medical Current से तंत्रिकाओं को उत्तेजित कर के स्नायुओं की कार्यक्षमता बनाए रखी जा सकती है और सुधारी जा सकती है।

क्योंकि विद्युतधारा से मांसपेशियों की उत्तेजन क्रीया (EMS).....

- मांसपेशियो का संकुचन (contraction) करती है।
- तंत्रिका की उत्तेजना ले जाने की क्षमता में कमी के कारण उत्तेजित न होनेवाले मांसपेशियोंकी कार्यक्षमता को पूर्ववत होने तक अथवा सुधार लाने के लिए तंत्रिका की उत्तेजन क्षमता को बनाए रखती है।
- लकवाग्रस्त/शिथिल मांसपेशियों को कार्यक्षम करती है।
- इसके द्वारा स्नायुओं की कार्यक्षमता में सुधार का आंकलन कर सकते हैं।
- इसके अंतर्गत तंत्रिका के उत्तेजना ले जाने की क्षमता के अनुसार विद्युतधारा का उपयोग संभव है।
- इसके द्वारा प्रभावित अंग के रक्तसंचार और लसीकाप्रवाह (lymphatic drainage) में सुधार होता है।
- इसके द्वारा इच्छित कार्य के लिए बदले गये स्नायु को उपयोग के लिए प्रशिक्षित कर सकते हैं।

उपचार के लिए मुख्यतः दो प्रकार की कम फ्रीक्वेन्सीवाली विद्युतधारा (Low Frequency Currents) का उपयोग करते हैं।

1) फेराडिक विद्युत धारा (Faradic Current) - तंत्रिका की उत्तेजना ले जाने की क्षमता (प्रवाहकत्व) सामान्य है लेकिन मांसपेशी कमजोर है, ऐसी परिस्थिति में फेराडिक विद्युत धारा उत्तेजना का उपयोग मांसपेशी संकुचन के लिए किया जाता है।

Electrical Muscle Stimulation machine

2) गॅल्वॅनिक विद्युत धारा (Galvanic Current) - तंत्रिका की उत्तेजन ले जाने की क्षमता कम होने या खंडित होने से मांसपेशी में कमजोरीवाली परिस्थिति में खंडित गॅल्वॅनिक विद्युत धारा (Interrupted Galvanic Current) IG उत्तेजना का उपयोग मांसपेशी के संकुचन (contraction) और शिथिलीकरण (relaxation) के लिए एक निश्चित अंतराल पर (Pulse duration) किया जाता है।

निम्नलिखित परिस्थिति में विद्युत धारा का उपयोग उपचार हेतु न करें।

1) हृदयरोग, मिरगी (एपिलेप्सी) के रोगियों पर।
2) शरीर के अंग में अथवा त्वचा में सूजन या संक्रमण होने पर।

उपचार शुरू करने से पहले ध्यान दें...

- रोगी को बाहों को सहारा देने वाली विद्युतरोधक कुर्सी पर आरामदायक स्थिति में बैठाएं।
- रोगी को विद्युत धारा उपचार से होनेवाले लाभ और उपचार के परिणाम की सीमा की पूरी जानकारी दें।
- रोगी को समझाना आवश्यक है कि उपयोग की जा रही विद्युत धारा बहुत ही कम तीव्रता की है और हानिकारक शॉक लगने का कोई खतरा नहीं है। ऐसा करने से रोगी उपचार की गतिविधियों में पूरा सहयोग देगा।

विद्युतधारा स्नायु उद्दीपन (EMS) यंत्र से उपचार का परिणाम, उपयोग किए गये विद्युत प्रवाह/धारा के प्रकार, उसकी तीव्रता और उपचार की अवधि पर निर्भर करता है।

विद्युत धारा से उपचार करने के लिए प्रभावित मांसपेशी से सम्बंधित तंत्रिका बिंदु (Nerve Point) और मांसपेशी बिंदु (Motor Point), दोनों जगह पर इलेक्ट्रोड रखा जाता है।

तंत्रिका बिंदु (Nerve Point) - प्रभावित मांसपेशी को उत्तेजित करने के लिए प्रभावित मांसपेशी संम्बंधित तंत्रिका जो त्वचा के पास होती है और उस पर इलेक्ट्रोड रखना सहज होता है। ऐसे बिन्दु को प्रभावित स्नायु उद्दीपन के लिए तंत्रिका बिंदु (Nerve Point) माना जाता है।

मांसपेशी बिंदु (Motor Point) - जहां तंत्रिका (Nerve) मांसपेशी में प्रवेश करती है, वह बिन्दु उद्दीपन के लिए योग्य होती है। ऐसे बिन्दु त्वचा के पास होने के कारण इलेक्ट्रोड की सहायता से संपर्क करना आसान हो जाता है। इसीलिए ऐसे बिन्दु को प्रभावित मांसपेशी उद्दीपन के लिए खोजकर मांसपेशी बिंदु उद्दीपित करें।

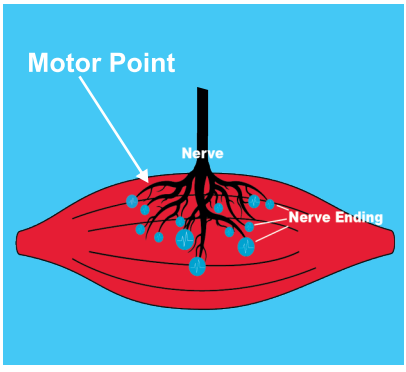

TRIGGER POINTS IN FACE

Muscles of face and eyes supplied by Facial Nerve (Zygomatic branch)

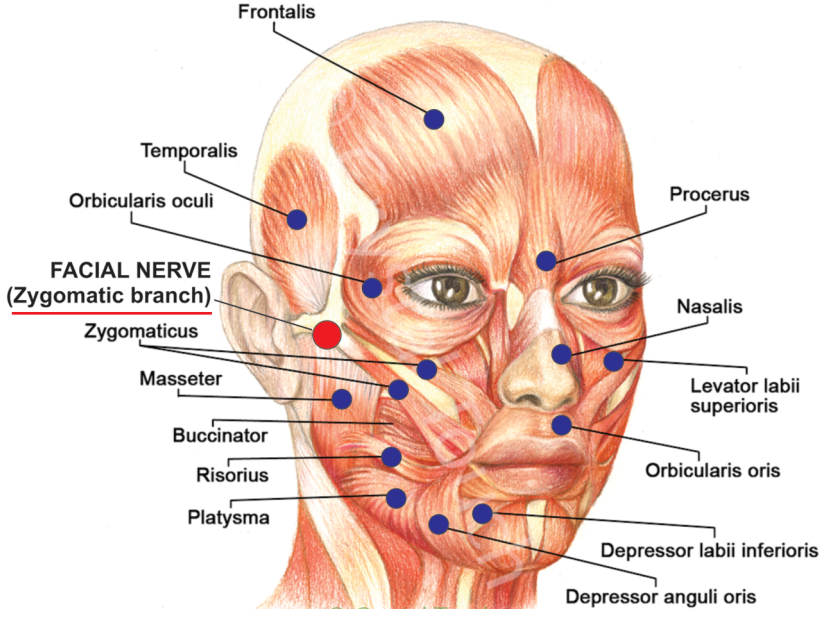

TRIGGER POINTS IN HAND AND FOREARM

Muscles of hand (palmar side) supplied by Ulnar and Median Nerve

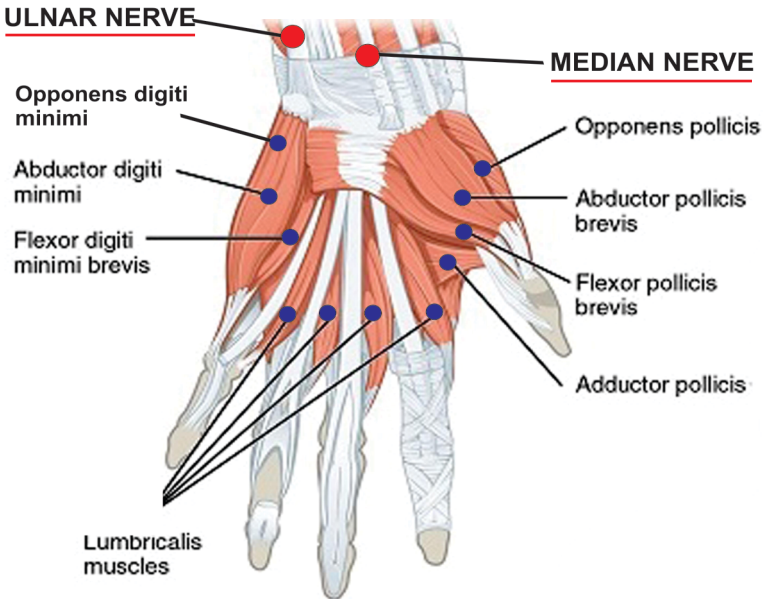

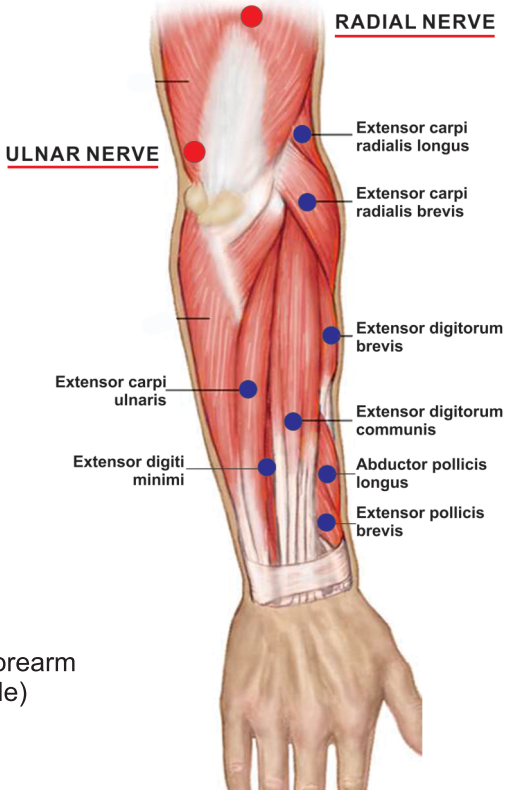

Muscles of forearm (posterior side)

Nerve point Motor point

TRIGGER POINTS IN LOWER LEG

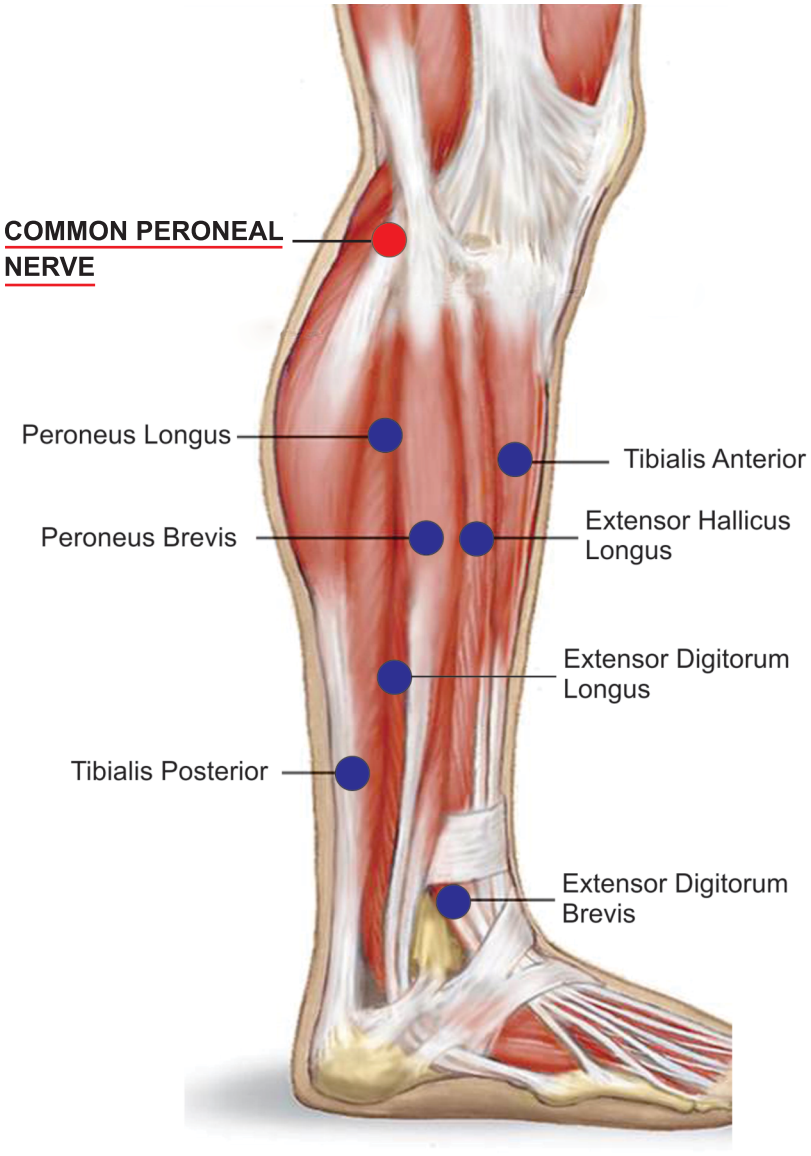

Muscles of leg (lateral side)

Nerve point **Motor point**

अगर स्टिरॉइड उपचार के साथ प्रभावित मांसपेशी की कार्यक्षमता में 2 - 4 सप्ताह में विद्युतधारा से मांसपेशी उद्दीपन से सुधार न हो तो ऐसी स्थिति में विद्युत धारा से मांसपेशी उद्दीपन उपचार बंद करें।

मोम स्नान उपचार (Wax Bath therapy)

बर्तन (Wax-bath tub) में गरम करके पिघले हुए मोम (Parafin Wax) की सहायता से गहराई तक त्वचा के नीचेवाले अंगों को सेंक सकते हैं और रुखी त्वचा को नमी दे कर मुलायम कर सकते हैं, क्योंकि मोम स्नान (Wax-bath) दिए गये अंग में

- रक्तसंचार बढ़ जाता।
- पसीने की ग्रंथियां (Sweat Glands) उत्तेजित होकर त्वचा की नमी बढ़ाकर उसे नरम और मुलायम बना देती है, और जोड़ों को ढीला करने में मदद करती है।

उंगली के जोड़ में ९०° से कम मोड़

- उंगलियों को मालिश करते समय जकड़े हुए जोड़ों को खोलने में मदद होती है और सिकाई के कारण जोड़ों का दर्द कम होता है। लेकिन उंगली के जोड़ों में 90° से कम मुड़ने पर, उपचार से अधिक फायदा नहीं होता है।

प्रभावित अंग को मोम स्नान देने के तुरंत बाद तेल से मालिश और व्यायाम करना जरूरी है। जोड़ों को ढीला करने के लिए इससे अच्छी मदद मिलती है।

मोम स्नान से उपचार के लिए 7 भाग मोम पैराफिन वैक्स (Parafin Wax) और 1 भाग द्रवरूप पैराफिन (7:1 अनुपात) में उष्णता को नियंत्रित रखते हुए बर्तन मे पिघलाना आवश्यक है।

उपचार के लिए योग्य मरीजों का चुनाव

- रूखी और सूखी त्वचा
- जकड़ी हुई उंगलियां/जोड़ (Contracture - stiff joint) और जोड़ों में दर्द
- दर्द तथा वेदनादायी तंत्रिका शोथ (Acute Neuritis)

निम्न परिस्थिति में अंग पर मोम स्नान से उपचार न करें

- खुले घाव / अल्सर, छाले
- त्वचा पर मुँहासे, दाद, खुजली (fungal infection)
- सूजन (inflammation)

उपचार देने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें

1) नियंत्रित तापमान तक मोम को बर्तन में पिघलाकर उपचार के लिए पहले से तैयार रखें।

2) पिघले हुए मोम का तापमान 42° से 49° सेंटीग्रेड (108° से 120° फेरनहीट) तक सीमित रखें। मोम का तापमान 50° सेंटीग्रेड से ज्यादा न हो इसका ध्यान रखें। **आप अपनी उंगली डालकर तापमान की जांच करें।**

3) उपचार शुरू करने से पहले रोगी के अंग की जांच करें और रोगी की योग्यता का आंकलन करें।

4) उपचार करने के लिए सम्बन्धित अंग (हाथ) को वैक्स बाथ में 5 से 6 बार डुबाकर निकालें अथवा अंग पर मोम की एक परत बनाएं।

5) मरीज़ का हाथ वैक्स बाथ के तल को अथवा आसपास की दीवार पर न छुए इसकी सावधानी रखें।

6) रोगी को मोम में लिपटे अंग को स्थिर रखने को कहें। मोम की परत लगे अंग को कागज अथवा ॲल्युमिनिअम फोईल में लपेटकर उष्णतारोधक थैली में 15 से 20 मिनट ढंक कर रखें।

7) रोगी को समझाएं कि, किसी प्रकार की असुविधा या तकलीफ महसूस करने पर तुरंत उपचार करनेवाले व्यक्ति को सूचित करें।

8) उपचार के बाद अंग को हिलाकर मोम की परत को निकालकर अलग से इकट्ठा कर दें। यह मोम पुनः उपयोग में लाया जाएगा।

9) वैक्स बाथ उपचार के तुरंत बाद रोगी के हाथों की मालिश और आवश्यक व्यायाम करवाएं।

अगर सप्ताह में वैक्स बाथ से उपचार संभव न हो तो रोगी को हर दिन पानी में 15 से 20 मिनट तक हाथ/अंग भिगोकर रखने, तेल से मालिश करने और आवश्यक व्यायाम करने के लिए कहें।

पुनर्रचनात्मक शल्यक्रिया के लिए किसे चुनें?

- पुनर्रचनात्मक शल्यक्रिया (ऑपरेशन) के लिए उसी व्यक्ति को चुनें जिससे उसका सामाजिक, व्यावसायिक और आर्थिक हित हो।
- सुन्न हाथ व पैरों वाले रोगियों मे स्वयं अपनी देखभाल करने का दायित्व बोध पैदा किया गया हो।
- शल्यक्रिया के बाद के परिणामों और सीमाओं से उसे अच्छी तरह से परिचित (वाकिफ) कराया गया हो।

विशेष ध्यान दें.....

1. लकवाग्रस्त स्नायु से उत्पन्न हुई विकृति का समय कम से कम 1 साल और ज्यादा से ज्यादा 3 साल हो।
2. बुरी तरह से अकड़े हुए उंगलियों के जोड़ वाले व्यक्ति शल्यक्रिया के लिए पूरी तरह से अयोग्य होते हैं।
3. कम से कम 6 महीनों का एम.डी.टी. उपचार पूरा हुआ हो।
4. वह कम से कम 6 महीनों से प्रतिक्रिया (reaction) और तंत्रिकाशोथ (neuritis) से मुक्त हो। पिछले 6 महिनों मे 'स्टिरॉइड' उपचार से मुक्त हो। लेकिन तंत्रिका शोथ की स्थिति में यह बंधनकारक नहीं।
5. व्यक्ति की उम्र 15-45 साल तक हो क्योंकि उसका व्यवसाय और उसकी जरूरतें ध्यान में रख कर ही शल्यक्रिया की जाती है।
6. शल्यक्रिया हेतु भेजने के समय उसकी त्वचा में गहरी दरारें, जख्म/फोड़ा या खुजली (Skin infection) जैसी बीमारी न हो।
7. शल्यक्रिया के लिए आने-जाने का प्रवासी खर्च और व्यावसायिक नुकसान भरपाई मिलने की सुविधा उसे प्राप्त हो।
8. शल्यक्रिया के लिए ऐसे केन्द्र पर भेजें जो सुस्थापित हो और जहाँ शल्यक्रिया के पहले और बाद में भी भौतिकोपचार (Physiotherapy) की सुविधा उसे प्राप्त हो सके।
9. शल्यक्रिया के पहले और उसके बाद प्रभावित आंख, हाथ और पैर की सुरक्षा अच्छी तरह से करने के लिए वह दृढ निश्चयी हो।

शल्यक्रिया विकृति सुधार का स्थाई इलाज नहीं।

शुरुआती हालत में ही अगर विकृति पर ध्यान दिया जाए तो शल्यक्रिया (ऑपरेशन) की जरुरत नहीं पड़ती।
इसे शल्यक्रिया के बिना भी ठीक किया जा सकता है।

कुष्ठरोग नियंत्रण पर नजर रखना

1. नए कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों का पता लगाना

संकेतक - वर्ष के दौरान चिन्हित किये गए कुष्ठरोगियों में MB (Multi-bacillary) रोग का अनुपात (%)।

अनुमान - बढ़ा हुआ अनुपात इस बात का संकेत है कि कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति का पता चलने में संभवतः देर हुई है और कुष्ठरोग का संक्रमण (संचार) जारी है।

संकेतक - वर्ष के दौरान पता लगाए गए नए कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों में श्रेणी-2 वाली विकृति का अनुपात (%)।

अनुमान - विकृति का बढ़ा हुआ अनुपात इस बात का संकेत है कि रोग के निदान में देर हुई है और कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों का पता लगाने वाली गतिविधियों में सुधार की जरूरत है।

2. गुणवत्तापूर्ण सेवाओं की पहुंच और सुलभता

संकेतक - वर्ष के दौरान पता लगाए गए नये कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों में 15 साल से कम उम्र के बच्चों का अनुपात (%)।

अनुमान - बच्चों का बढ़ा हुआ अनुपात इस बात का संकेत है कि उस क्षेत्र में कुष्ठरोग का संक्रमण सक्रिय है।

संकेतक - वर्ष के दौरान पता लगाए गए नए कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों में महिलाओं का अनुपात (%)।

अनुमान - महिलाओं का बढ़ा हुआ अनुपात इस बात का संकेत है कि महिलाओं के लिए कुष्ठरोग पहचान सुविधाएं ज्यादा सुलभ हैं।

कुष्ठरोग नियंत्रण के प्रयासों की गति बनाए रखने के लिए विशेष रूप की योजना बनाने और प्राथमिक स्तर पर NLEP की प्रगति पर नजर रखने के लिए प्रमुख संकेतकों का नियमित मूल्यांकन उपयोगी है।

3. कुष्ठरोग स्थिति का मूल्यांकन

संकेतक - एक वर्ष में 1,00,000 जनसंख्या में नए कुष्ठरुग्णों की पहचान।

अनुमान - कुष्ठरुग्णों की संख्या में कमी कुष्ठरोग पर नियंत्रण और संक्रमण में आयी कमी का संकेत है।

संकेतक - एक वर्ष में 10 लाख जनसंख्या में श्रेणी-II की विकलांगतावाले नए कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों की संख्या।

अनुमान - कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों की संख्या में बढ़ौतरी इस बात का संकेत है कि रोग के निदान में देरी हुई है और नए कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों की पहचान करनेवाली गतिविधियों को सुदृढ़ करने की जरूरत है।

4. कुष्ठरोग उपचार प्रबंधन की उपलब्धि

संकेतक - नियत समय में कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों का उपचार पूरा होने और उन्हें कुष्ठमुक्त (निरोग) घोषित करने का अनुपात (%)।

अनुमान - अनुपात में कुष्ठमुक्त व्यक्तियों की बढ़ौतरी इस बात का संकेत है कि MDT उपलब्धि में सुधार हुआ है और बेहतर उपचार के निर्देशों के अनुसार परिपूर्ति हुई है।

संकेतक - उपचार के दौरान कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों में नई विकलांगता / विकृति का अनुपात (%)।

अनुमान - नई विकलांगता / विकृति का घटा हुआ अनुपात विकृति की रोकथाम / प्रतिबंध के लिए गुणवत्तापूर्ण सेवाओं की उपलब्धि और सक्षम संदर्भन व्यवस्था में वृद्धि का संकेत है।

WHO (विश्व स्वास्थ्य संगठन) ने वर्ष 2010 के आधार संख्या की तुलना में वर्ष 2020 तक नए कुष्ठरुग्ण में दिखाई देनेवाली विकलांगताओं (श्रेणी-II) में प्रति 10 लाख में 1 की दर से कमी लाने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

MCR Footwear & Splint Unit

If you have foot problems such as . . .

- loss of sensation
- heel pain
- corns
- cracks & fissures

Use special MCR footwear for a comfortable walking

- Softness gives comfort.
- Distributes weight evenly in the sole and reduces pressure.
- Relieves pain and burning sensation while standing and walking.

'Made to order'

Contact for further information:

ALERT-INDIA

112, Shree Diamond Centre,
1st Floor, Opp. Home Town 24x7,
Near Punjab & Sindh Bank, L.B.S.
Marg, Vikhroli (W),
Mumbai – 400 083

Tel.: 022 25790285

E-mail: alertjoy@gmail.com
info@alertindia.org

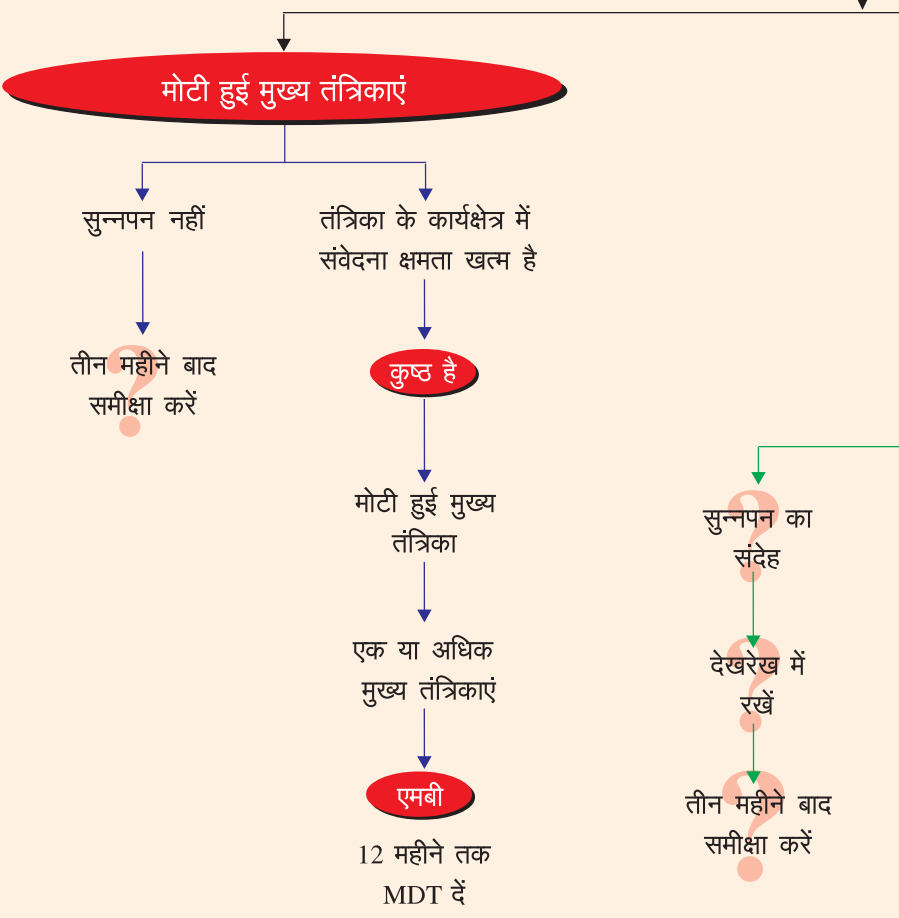

वर्गीकरण (Grouping for MDT) **के प्रमुख आधार :**

क. पॉसीबेसिलरी कुष्ठ (PB) :

1. त्वचा पर 1-5 सुन्न दाग।

ख. मल्टीबेसिलरी कुष्ठ (MB) :

1. 6 या ज्यादा सुन्न दाग।
2. त्वचा पर दागों की संख्या भले कितनी हो, पर एक या अधिक मुख्य तंत्रिकाओं का मोटा होना।
3. एएफबी के लिए स्मीयर जांच का पॉजिटिव होना।

का परीक्षण करें

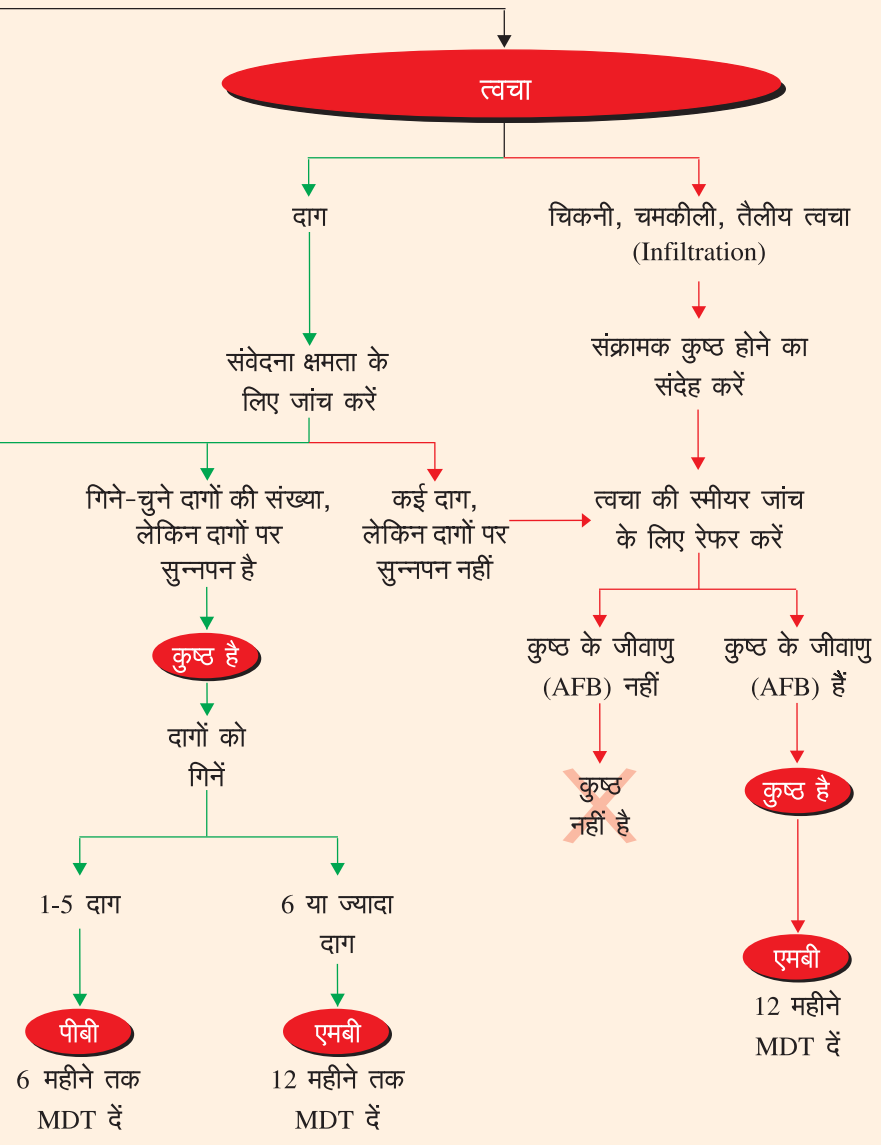

बहु औषधोपचार (एम.डी.टी.) Multidrug Therapy (MDT)

PB (Pauci-bacillary) - 6 months **MB (Multi-bacillary) - 12 months**

Doses		Rifampicin	Clofazimine	Dapsone
Adult (>14 yrs)	Supervised	600 mg monthly	300 mg monthly	100 mg monthly
	Daily	--	*50 mg*	*100 mg*
Child (10 - 14 yrs)	Supervised	450 mg monthly	150 mg monthly	50 mg monthly
	Daily	--	*50 mg alternate day*	*50 mg*
Age 0 - 9 yrs	Supervised	10 mg/kg body weight monthly	6 mg/kg body weight monthly	2 mg/kg body weight monthly
	Daily	--	*1 mg/kg body weight*	*2 mg/kg body weight*

समाज में कुष्ठ रोग के डर को दूर करने के लिए शारीरिक विकृति की रोकथाम आवश्यक है।

विकलांगता की रोकथाम (Prevention of Disability - POD) कुष्ठ नियंत्रण और कुष्ठ रोग से जुड़े कलंक से निपटने के प्रमुख कार्यो में से एक है। इसलिए, विकलांगता की रोकथाम उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी की कुष्ठ रोग की शुरूआती पहचान और मल्टी–ड्रग थेरेपी (एमडीटी) के द्वारा उपचार।

प्राथमिक, द्वितिय और तृतीयक – सभी स्तरों पर स्वास्थ्य कर्मी प्रशिक्षण, उचित समय पर कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों को दिशा निर्देश, परामर्श देने और समुचित उपचार के लिए उचित चिकित्सालय पर संदर्भित करने के लिए कर्तव्यबद्ध हैं।

नए कुष्ठ रोगियों के बीच विकलांगता को रोकने और कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों में मौजूदा विकलांगता (Prevention of Worsening of Disability - POWD) के बिगड़ने की रोकथाम में कुष्ठरोग संदर्भन सेवा केंद्र (Leprosy Referral Centre - LRC) की टीमों की विशेष भूमिका होती है। यह आवश्यक है की सार्वजनिक स्वास्थ्य कर्मियों को प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करें, जिससे कुष्ठ जनित विकृति की रोकथाम और देखभाल संभव हो सके।

इस पुस्तिका में चिकित्सा और पैरामेडिकल कर्मियों के लिए सरल दिशानिर्देश और अनुदेश हैं, जिनको प्रारंभिक तंत्रिका क्षति की पहचान करने और कुष्ठ रोग संबंधी जटिलताओं के इलाज के लिए मार्गदर्शन करने की ज़िम्मेदारी दी गई है। यह स्व–देखभाल और निवारक उपायों पर कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों को पढ़ाने, परामर्श देने और मार्गदर्शन करने के लिए सचित्र प्रस्तुति है। यह पुस्तिका स्वास्थ्य कर्मियों को अन्य बीमारियों के कारण समान समस्याओं वाले व्यक्तियों का मार्गदर्शन करने में भी उपयोगी होगा।

हमें विश्वास है कि सभी स्तरों पर चिकित्सा अधिकारी / उपचार प्रदानकरता इस गाइड के चौथे संस्करण को विकृति की जटिलताओं और उनके परिणामों से प्रभावित सभी कुष्ठ रोगियों को उच्चतम देखभाल प्रदान करने में उपयोगी पाएंगे। भविष्य में यह कलंक, विस्थापन को कम करने और कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों के सामाजिक स्विकृती को संभव करने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगी।

Translation of the prelude, 15th January, 2021.

ALERT - INDIA
Association for Leprosy Education, Rehabilitation & Treatment - India
B-9, Mira Mansion, Sion (West), Mumbai - 400 022.
Tel.: 022 2403 3081-2, 2407 2558
Email: info@alertindia.org | www.alertindia.org